Date
29-1-2019

निबन्ध लेखन

शब्द संख्या- 800 (लगभग)

सर्वसिद्धिप्रद: कुंभ

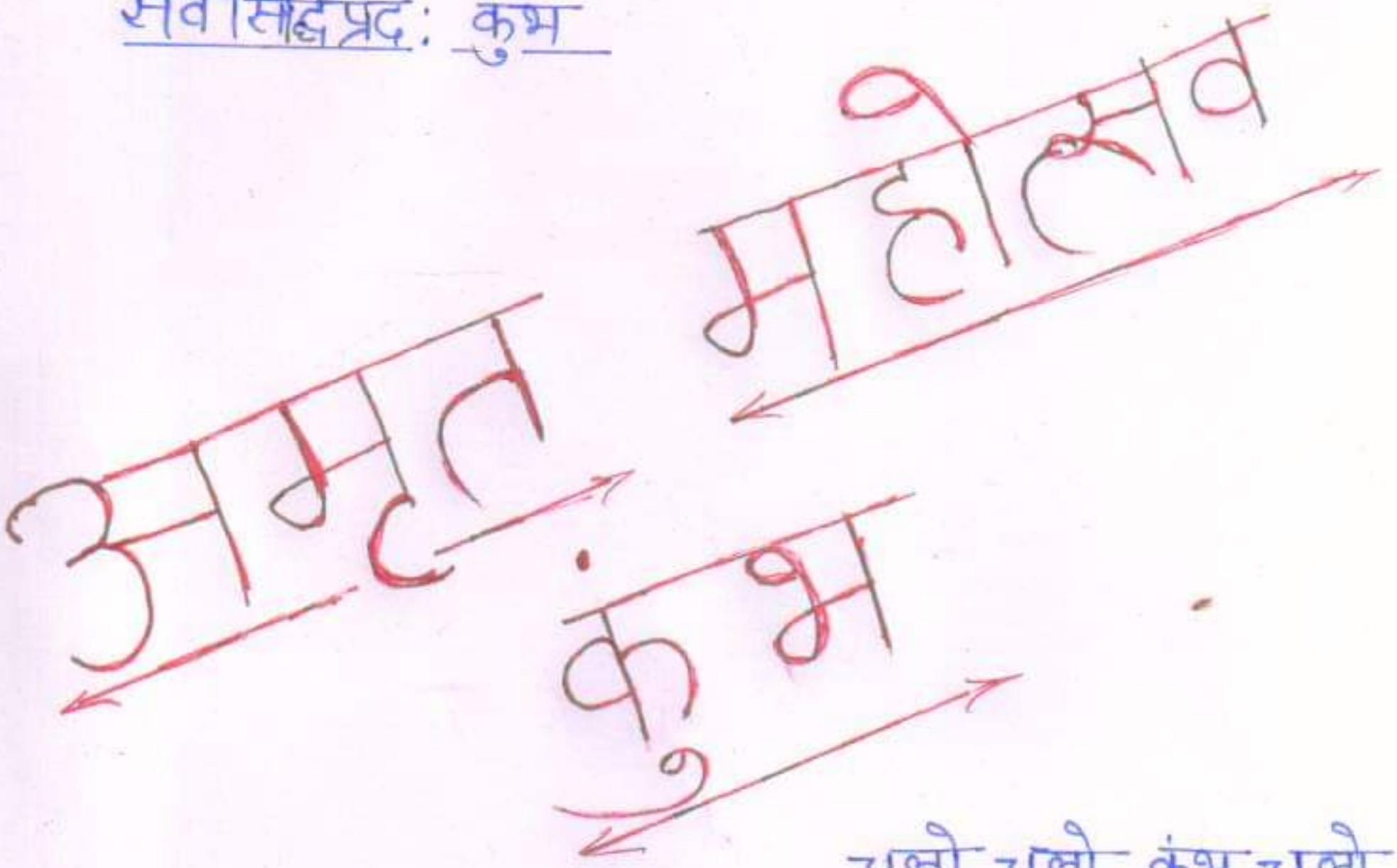

* पौराणिक मान्यता
* कुंभ महापर्व के स्थान
* प्रयागराज में कुंभ महापर्व
* प्राचीन विरासत में आधुनिकता का अद्भुत संगम

लेखक

शशांक शेखर
भदौरिया

Date
24-1-2019

अमृत महोत्सव कुंभ →

कुंभ की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। कुंभ के संदर्भ में हमारे आद्य महापुरूषों तथा ऋषियों ने यजुर्वेद में कहा था, 'यर्त विश्वं भवत्येक नीड़म्' अर्थात जहां सम्पूर्ण विश्व एक नीड़ (घोंसले) में आ जाता है। अतः सम्पूर्ण विश्व को एक सांस्कृतिक सूत्र में बांधने के लिए ही कुंभ महापर्व का आयोजन भारत देश में होता है।

आस्था एवं सामाजिक चेतना से जुड़ा कुंभ महापर्व भारत की सामाजिक व सांस्कृतिक अवधारणाओं का जीवंत प्रतीक है। यह महापर्व न केवल भारतवर्ष को, अपितु पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण तक संपूर्ण विश्व को एक धरोंदे में लाकर स्थापित कर देता है। विश्व के कोने-कोने से आए साधु-महात्मा, संन्यासी, रागी, वैरागी, नागा, योगी, गृहस्थ आदि सभी धार्मिकजनों, विद्वतजनों की यहाँ एक रहस्यमयी दुनिया एकत्रित हो जाती है। यह विश्व का सर्वश्रेष्ठ धार्मिक आयोजन है।

कुंभ का शाब्दिक अर्थ है घट या कलश। कुंभ (कलश) को सनातन धर्म में मंगल (शुभ) का प्रतीक माना गया है। अतः प्रत्येक धार्मिक कृत्य, यज्ञ, पूजा व धार्मिक अनुष्ठान में जलपूर्ण कलश स्थापित किया जाता है।

पौराणिक मान्यता

देवासुर संग्राम के बाद देवताओं व असुरों ने क्षीर सागर में समुद्र मंथन किया। मंथन से चौदह रत्नों की प्राप्ति हुई जिन्हें परस्पर बांट लिया गया लेकिन अमृत कलश को प्राप्त करने के लिए देवताओं व असुरों के मध्य विवाद हो गया। तब भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर सबको अमृत-पान कराने की बात कही और अमृत कलश का दायित्व इंद्रपुत्र जयंत को सौंपा।

देवताओं व असुरों में 12 दिनों तक अमृत को लेकर युद्ध चलता रहा। देवताओं का एक दिन मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है। ऐसे में 12 दिन के बराबर 12 वर्ष लगे तथा आपसी खींचतान में अमृत की कुछ बूंदे छलक कर हरिद्वार, प्रयाग, नासिक व उज्जैन पर पड़ीं। इसी कारण वर्णित स्थानों पर ही 12 वर्षों में कुंभ महापर्व का आयोजन होता है।

कुंभ महापर्व के स्थान

ज्योतिष गणना के क्रम में कुंभ का आयोजन चार प्रकार से माना गया है।

(i) हरिद्वार में गंगा तट पर → बृहस्पति के कुंभ (राशि) में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर।

(ii) प्रयागराज में त्रिवेणी तट पर → बृहस्पति के मेष राशि में प्रविष्ट होने तथा सूर्य व चन्द्रमा के मकर राशि में आने पर

(iii) नासिक में गोदावरी तट पर → बृहस्पति एवं सूर्य के सिंह राशि में प्रविष्ट होने पर।

(iv) उज्जैन में शिप्रा तट पर → बृहस्पति के सिंह राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर।

भगवान विष्णु की आज्ञा से सूर्य, चन्द्र, शनि एवं बृहस्पति भी अमृत कलश की रक्षा कर रहे थे और विभिन्न राशियों (सिंह, कुम्भ एवं मेष) में विचरण के कारण ये सभी कुंभ महापर्व के द्योतक बन गए।

प्रयागराज में कुंभ महापर्व

प्रयाग नगरी के सन्दर्भ में अनेक पौराणिक मान्यताएं हैं जैसे-

* अमृत कलश की बूंद गिरी और तीर्थ हुई प्रयाग की धरती।
* सृष्टि की रचना के बाद ब्रह्मा जी ने प्रयाग में पहला यज्ञ किया।
* 88 हजार ऋषियों की तपोभूमि है प्रयाग।
* दसों दिशाओं के संत यहाँ आते हैं और धर्म के महापर्व की शोभा बढ़ाते हैं।

प्रयागराज में 15 जनवरी से 4 मार्च के बीच कुंभ का आयोजन हो रहा है। त्रिवेणी में स्नान कर मोक्ष प्राप्ति की इच्छा के लिए करोड़ों लोग इस अमृत महोत्सव में शामिल हो रहे हैं। त्रिवेणी तट पर लगभग 55 दिनों तक चलने वाले इस महापर्व के दौरान एक अस्थायी नगर सा स्थापित हो गया है जिसे देखने के लिए न सिर्फ भारत बल्कि सात समुंदर पार से भी लोग खिंचे चले आ रहे हैं।

प्राचीन विरासत में आधुनिकता का अद्भुत संगम

सामान्यतः प्रत्येक सरकार कुंभायोजन के लिए भव्य से भव्य तैयारी करती है लेकिन वर्तमान राज्य व केन्द्र सरकार ने कुंभ मेले को दिव्य एवं भव्य स्वरूप प्रदान करने के लिए जो प्रयास किए हैं तथा इस महापर्व में आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों का प्रयोग किया है, सराहनीय हैं। इस बार का कुंभ सबसे अलग और अलौकिक है।

वर्तमान सरकारों के प्रयास से विश्व भर में कुंभ आयोजन की ब्रांडिंग की गई है। वर्ष 2017 में दक्षिण कोरिया के जेजू में संपन्न हुए UNESCO के 12 वें सत्र में भारत के कुंभ मेले को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। यह हमारे व हमारे देश के लिए गर्व की बात है।

प्रयागराज के बारे में मान्यता यह है कि अपनी उत्कृष्टता के कारण यह प्रयाग है तथा प्रधानता के कारण राज। प्रयाग कुंभ की महिमा निराली है। मत्स्य पुराण में वर्णित है कि तीनों लोकों में प्रयाग सबसे न्यारा है यही कारण है कि परमपिता ब्रह्मा ने सर्वप्रथम इस पवित्र धरा पर यज्ञ किया।

इस अद्भुतमहोत्सव के मौके पर प्रयागराज की छटा देखते ही बनती है। प्रयागराज में कुंभ मेला परिक्षेत्र करीब 3200 हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैला है। यहाँ आधारभूत संरचना से जुड़ी सुविधाओं पर विशेष रूप से ध्यान दिया

गया है। नई सड़कों का निर्माण, चौड़ीकरण व रेलवे स्टेशनों पर सुविधाओं की बेहतरी पर काम किया गया है। मेला क्षेत्र में २५० किमी: चकई प्लेट वाली सड़कें बनाई गई हैं तथा त्रिवेणी पर २२ पांटून पुल बनाए गए हैं।

प्रयागराज श्रद्धालुओं व सैलानियों के स्वागत को आतुर है। मेला क्षेत्र में जनमानस क्या दीवारें भी कुंभ के मर्म को समझा रही है। बड़े-बड़े बैनरों पर कुंभ की गौरवगाथा का बखान है। इसे 'कुंभ की कहानी, प्रयाग की जुबानी' विषय पर प्रस्तुत किया गया है। इस थीम पर पौराणिक महत्व के साथ चित्र भी प्रदर्शित किए गए हैं तथा शहर में विभिन्न चौराहों व स्क्रीन पर वीडियो भी चलाए जा रहे हैं।

डिजिटल स्क्रीन पहली बार लगाई गई हैं जिसमें चारों वेद समेत 18 पुराणों व उपनिषदों के प्रमुख सूत्र वाक्य तथा रामचरित मानस के चौपाई-दोहे व दिन-रात कुंभ की महिमा का बखान किया जा रहा है। पहली बार 'PAINT MY CITY' के माध्यम संगम जाने वाले प्रत्येक मार्ग की सड़कों की पेंटिंग की गई है।

संगम तट पर अरैल क्षेत्र में पहली बार हाइटेक टेंट सिटी स्थापित की गई है। इसे विशेष रूप से अप्रवासी भारतीयों के लिए बसाया गया है जिसका किराया होटलों के किराए के समान ही है।

इस महापर्व में श्रद्धालुओं के स्वास्थ्य के संदर्भ में विशेष रूप से ध्यान दिया गया है। इसके लिए पहली बार स्पेशल एंबुलेंस के साथ रिवर एंबुलेंस का भी प्रबंध किया गया है। आंतरिक सुरक्षा के संदर्भ में इस बार 13 अखाड़े महात्माओं व भक्तों के पहचान पत्र बना रहे हैं। कुंभ में हर महात्मा को पहचान पत्र को रखना अनिवार्य है।

कुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए पुलिस व्यवस्था सक्रिय है। डिजिटल सेरफामी के माध्यम से श्रद्धालुओं की हर समस्या के समाधान का प्रयास किया जाएगा। इसके अलावा वर्तमान राज्य सरकार ने भी Kumbh.gov.in वेबसाइट लांच की है जिसमें कुम्भ 2019 से लेकर प्रयागराज, यात्रा व ठहराव तथा नागरिक केन्द्र आदि के बारे में पूरी जानकारी उपलब्ध है। वर्तमान राज्य सरकार ने इस अर्ध-कुंभ को कुंभ का दर्जा देने की घोषणा की तथा वर्ष 2025 में होने वाले कुंभ को 'महाकुंभ' नाम देने की बात कही है।

भारतीय उद्योग परिसंघ (CII) रिपोर्ट के अनुसार यह कुंभ महापर्व उत्तर प्रदेश में 1.2 लाख करोड़ रुपए राजस्व की वृद्धि करेगा। ध्यातव्य है कि वर्तमान राज्य सरकार ने कुंभ महापर्व के लिए 4200 करोड़ रुपए मंजूर किए हैं। कुंभ महापर्व से जुड़ी गतिविधियां सकारात्मक

रूप से प्रदेश की अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित कर रही है तो दूसरी तरफ प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने में यह महापर्व सहायक सिद्ध हो रहा है। वास्तव में कुंभ महापर्व नामक प्राचीन धरोहर में आधुनिकता का संगम अद्भुत है जो प्रदेश के समावेशी विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

कुंभ महापर्व भावना के नैपथ्य में जीवंत आस्था तथा निष्ठाभाव ही कार्यशील रहा है। यह निष्ठा करोड़ों श्रद्धालुओं की चेतना को सीमित स्व से निकालकर खुले मैदान में, कड़कड़ी शीत मौसम की चिंता न करते हुए नदियों के तटों पर खींचकर ले जाती है। यहाँ पर विभिन्न आयु वर्ग सर्व-जाति-वर्ग, वर्ग के लोग, प्रदेशों की सीमाओं को पार करते हुए, गरीब-अमीर के दायरे को तोड़ते हुए अनेक भाषा-बोलियों में शब्द-साधना करते हुए खुद को परम में समर्पित करने के लिए संकल्पशील दिखाई देते हैं।

कुंभ का बौद्धिक, पौराणिक, ज्योतिषीय आधार होने के साथ-साथ वैज्ञानिक आधार भी है। कुंभ का उद्देश्य केवल आस्थापूर्ति व लोकरंजन ही नहीं है अपितु इसमें लोककल्याण का भाव भी निहित है। विद्वानों के अनुसार प्राचीनकाल से आयोजित हो रहे कुंभ का एक प्रमुख उद्देश्य नदी-संरक्षण भी है। विद्वानों की यह बात

उचित एवं व्यावहारिक प्रतीत होती है। प्राचीनकाल से ही हमारे पूर्वजों द्वारा नदियों को मां का दर्जा दिया गया तथा इनमें स्नान को आस्था व धर्म से जोड़ने की प्रथा का स्पष्ट उद्देश्य नदियों की सुरक्षा के संदर्भ में ही होगा तथा इसी क्रम में कुंभ जैसे स्नान पर्व की [redacted] परिकल्पना भी की गई होगी।

हमारे पूर्वजों का यह मानना रहा होगा कि जब लोग नदियों के प्रति आस्थावान होंगे तो उनका संरक्षण भी करेंगे तथा कुंभ मेलापर्व के समय एकजुट होकर नदियों के लिए कार्य करेंगे। लेकिन तत्कालीन समय में उन्हें इस बात का तनिक भी आभास नहीं रहा होगा कि भविष्य निरपवाद रूप से ऐसे जनों का है जिनकी कथनी और करनी में वृहद अंतर होगा।

आज नदियों के प्रति लोगों में आस्था तो है लेकिन नदियों के संरक्षण के संदर्भ में अधिकतर जनमानस सोया हुआ है, जागरूक नहीं है। यही कारण है कि हमारे देश में नदियों की दशा दयनीय होती जा रही है। लोगों को यह समझना होगा कि कुंभ मेलापर्व केवल लोकरंजन का महोत्सव नहीं है बल्कि लोककल्याण का साधन भी है।

वर्तमान में भौतिक संसाधनों के आधिक्य में व्यक्ति के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों में अवमूल्यन हुआ है। इस माहौल में तो कुंभ सरीखे अमृत महोत्सवों की महत्ता और बढ़ जाती है।

→ शशांक शेखर भदौरिया